—नैना बावरिया, चौथी

साइकिल

गाँव, शहर जाती हमारी साइकिल,
पैट्रोल बिना सैर कराती साइकिल।।

छोटी-सी साइकिल सैर कराती,
घुमा-घुमाकर मन बहलाती।
मेरे मन को भाती साइकिल,
दुनिया की सैर कराती साइकिल।।

साइकिल है मेरी, बड़ी मज़ेदार,
मैंने चलाया है इसको बार-बार।।

—महेश कुमार, छठी, कानपुर, उ. प्र.

जाड़े का इन्तज़ार

पिछले साल यानी 2008 के सितम्बर माह में मैंने कनाडा के एक स्कूल में जाना शुरू किया। अक्टूबर में मैंने पहली बार अपने शहर में बर्फ गिरती देखी तो मुझे बहुत उत्सुकता हुई। मैं गिरती बर्फ का अनुभव लेने कई बार घर के बाहर निकली और हर बार गीली हो गई। मुझे सर्दी लग गई क्योंकि बर्फ पिघलने लगी थी। और मैं उसी में भीग गई थी। उसी समय बिजली बन्द हो गई थी। इसलिए स्कूल भी बन्द कर दिए गए। मैंने अपनी भाभी से पूछा कि यह सारी बर्फ कब तक पिघल जाएगी? वह बोली, "क्या तुम मज़ाक कर रही हो? अभी तो बर्फ और गिरेगी। उसकी परत काफी मोटी होती जाएगी। 6-7 महीने तक बर्फ हटने वाली नहीं।" मेरे चेहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कान खिल गई। फिर मैंने पूछा कि ऐसे बर्फीले दिनों में भी स्कूल जाना होगा? भाभी बोली, "हाँ, बिल्कुल जाना होगा। आज तो स्कूल इसलिए बन्द है क्योंकि बिजली नहीं है। तापमान -10 डिग्री सेल्सियस होता है, तब भी स्कूल जाना ही होता है।" यह सुनकर मैं घबरा गई। सोचने लगी कि ऐसे में मैं स्कूल कैसे जाऊँगी? सबने बताया कि तुम्हें कुछ दिन ही बर्फ अच्छी लगेगी। दो-तीन महीने में तुम इससे उकता जाओगी। लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। मुझे जाड़े का वह मौसम बहुत अच्छा लगा। मैं इन्तज़ार कर रही हूँ कि फिर जाड़े का मौसम आए मैं बर्फ देखूँ और मज़े करूँ।

—तारा रस्तोगी, लन्दन, कनाडा

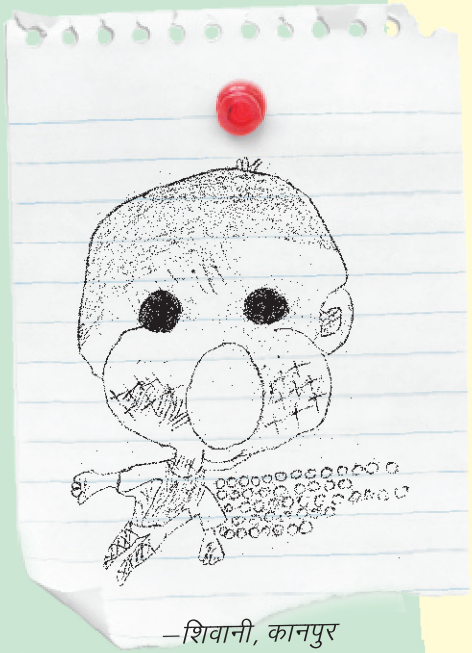

—शिवानी, कानपुर

— स्प्रह सेमवाल, देहरादून

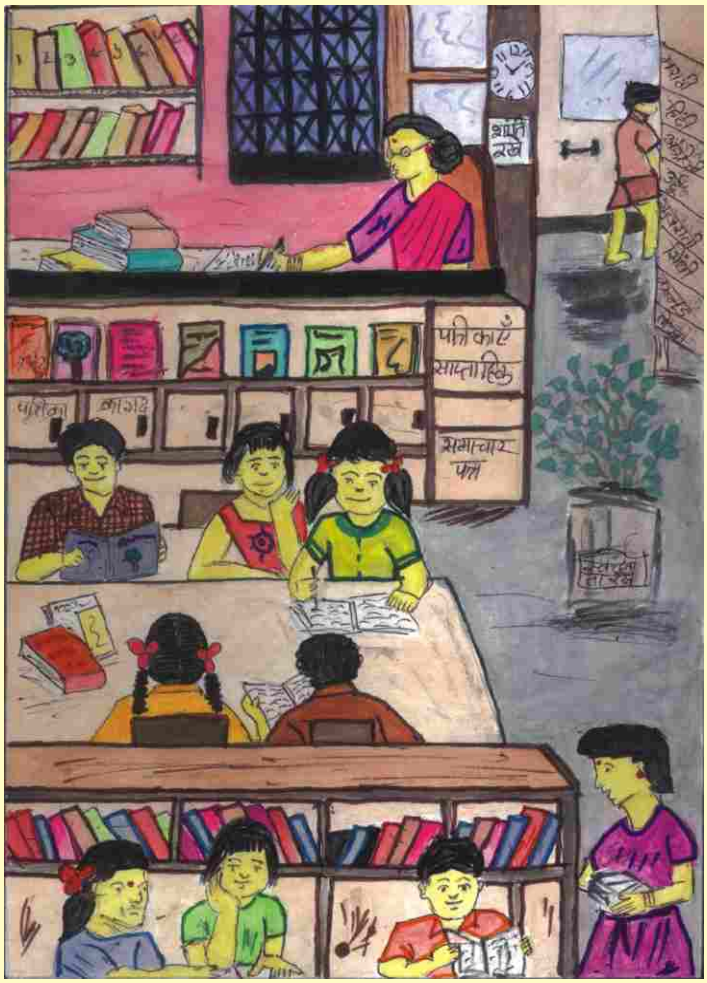

—अनिल पूनम परमार, छठी, मुम्बई

अगर कहीं मैं घोड़ा होता

अगर कहीं मैं घोड़ा होता
वह भी लम्बा-चौड़ा होता
तुम्हें पीठ पर बिठा करके
बहुत तेज़ मैं दौड़ा होता
पलक झपकते ही ले जाता
दूर पहाड़ों की वादी में
बातें करता हुआ हवा से
बियाबान में, आबादी में।

—प्रस्तुतिः अजय यादव, पाँचवीं, देवास

हा..हा हा...

एक कंजूस अपनी बिल्डिंग की छत से गिरा। नीचे गिरते वक्त जब वह अपने घर की रसोई की खिड़की के आगे से गुज़रा तो उसने देखा कि उसका बेटा रोटी बना रहा था। वो ज़ोर से चिल्लाया, "मेरे लिए रोटी मत बनाना।"

भेड़िया और सारस

एक जंगल में एक भेड़िया रहता था। एक दिन भेड़िया माँस खा रहा था। अचानक एक बड़ी-सी हड्डी उसके गले में अटक गई। भेड़िया बहुत घबरा गया। सारस जो पेड़ पर ही बैठा यह सब देख रहा था। सारस को देखते ही भेड़िया बोला, "सारस मुझे बचाओ, मैं मर जाऊँगा। मेरे गले में एक बड़ी-सी हड्डी अटक गई है, मुझे बचाओ।" सारस थोड़ी देर सोचने के बाद बोला, "मैं तुम्हें बचाऊँगा।"

तुम मुँह खोलो। भेड़िए ने मुँह खोला। सारस ने अपनी लम्बी चोंच से भेड़िए के गले से हड्डी निकाल ली। भेड़िया बहुत खुश हुआ। लेकिन जैसे ही सारस ने हड्डी निकाली भेड़िया सारस पर झपट पड़ा। पर, सारस बहुत ही चालाक था। सारस उड़ गया और भेड़िया देखता ही रह गया।

—प्रस्तुतिः शरत, पता नहीं लिखा

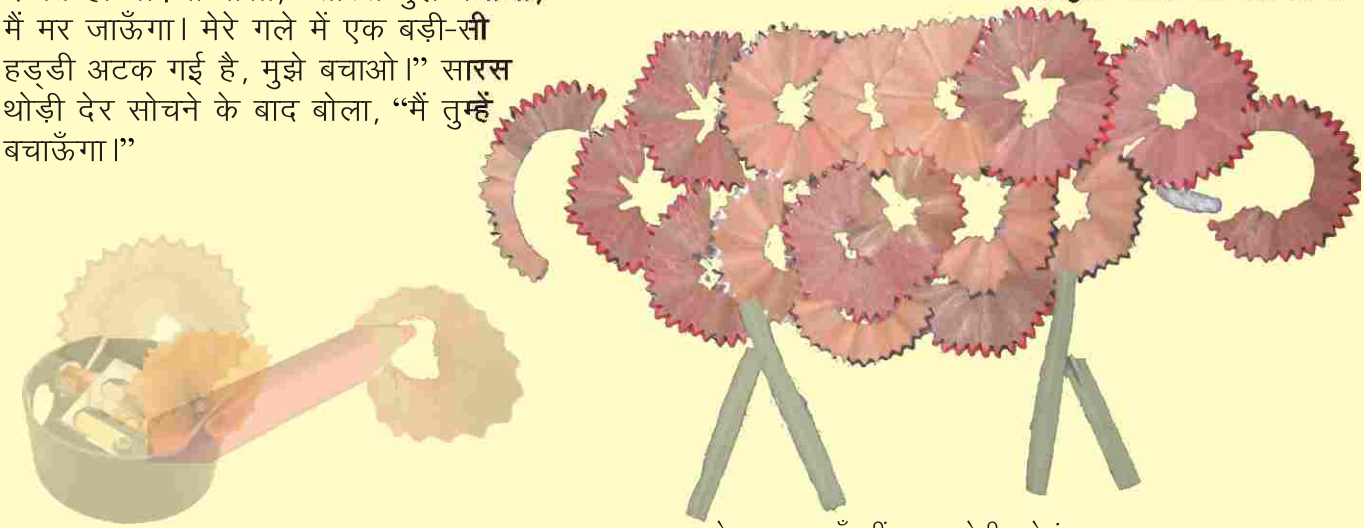

—प्रमोद यादव, पाँचवीं, मालाखेड़ी, होशंगाबाद, म. प्र.

जब मेरे घर के सामने रोड बना

– परी, तीन साल, भोपाल

दो साल पहले मेरे घर के सामने का रोड बहुत खराब था। मुझको स्कूल जाने में बहुत तकलीफ होती थी। मेरा ऑटोवाला हमेशा किरकिर करता था। जब बारिश आती तो रोड पूरी कीचड़ से भर जाती थी। जब कोई भी मेरे घर आता तो बोलता कि रोड खराब है, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं भगवान से बोलता कि मेरे घर का रोड बन जाए। मैं साइकिल भी नहीं चला पाता था। स्कूल जाते समय मेरे जूते कीचड़ से खराब हो जाते थे। जब मैं अपने नाना-नानी के घर गया। बाद में जब मैं घर वापस आया तो मैंने देखा कि डामर का रोड बन गया है। तो सब लोगों को अच्छा लगा और मैं भी साइकिल चलाने लगा और मेरा ऑटोवाला भी बहुत खुश हुआ। हम सब मोहल्ले वाले बहुत खुश हुए। हम सभी बच्चे बहुत खुश हुए।

मैंने भगवान को धन्यवाद दिया। मुझे लगता है कि सभी मोहल्लों और गाँवों में अच्छी सड़क बन जाए ताकि हम बच्चों को स्कूल जाने और साइकिल चलाने में परेशानी ना हो और हम सब बच्चे खुश रहें।

– वेदान्त चाटे, तीसरी, मानकापुर, महाराष्ट्र

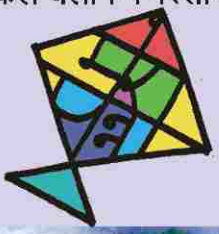

– मेघा जैन, पाँचवीं, भोपाल

कछुआ और चमत्कारी पेड़

कछुआ एक दिन नदी के किनारे टहल रहा था कि उसकी नज़र चींटी की बांबी पर पड़ी। उसने सोचा कि क्यों न चींटियों से दोस्ती की जाए? पर, जब वह पास गया तो उसने सोचा कि हो सकता है यह साँप का बिल हो। डर के मारे वह गिरने ही वाला था कि वह सम्भला। उसने सोचा कि साँप उसका क्या बिगाड़ेगा? वह तो अपने खोल में घुस सकता है। वह फिर से ऊपर चढ़ने लगा। तब उसे लगा, हो न हो यह एक पहाड़ होगा। पर, यह खत्म नहीं होता। हो न हो उसके ऊपर भूल-भुलैया रस्ते बने होंगे। उसकी उत्सुकता बढ़ती गई और वह चढ़ता गया। इतना ऊपर कि उसे ठण्डी हवा का एक झोंका लगा। उसने सोचा कि ज़रूर वह बादलों के पार का रास्ता होगा।

पर, यह क्या! जैसे ही थोड़ा और ऊपर गया तो उसने देखा कि पक्षी फूलों का रस पी रहे हैं। तितलियाँ फूलों पर मँडरा रही हैं। वे सब बहुत खुश हैं। यह बगीचा तो नहीं है? इतना ऊपर? फिर उसने सोचा, अरे, मैं भी कितना बुद्धू हूँ यह और कुछ नहीं पेड़ है।

– चकमक के जुलाई अंक में दिए चित्रों पर काकीनाडा, आँध्र प्रदेश के दीपंकर लोंढे,ने यह कहानी बुनी